प्रेमाश्रय

काव्य संग्रह

तेजकरण जैन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

प्रेमाश्रय

काव्य संग्रह

तेजकरण जैन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-057-5"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ९४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **तेजकरण जैन**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

PREMASHRAY BY TEJKARAN JAIN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

बाल्यकाल से ही आदिवासी अंचल में रहने, गांव की समस्या, भोले-भाले लोगों का शोषण, भयावह अकाल, प्रताड़ित बचपन, एक अजीब सा संघर्ष करीब से देखा, सहा है। जीवन सुकोमल, कल्पनाशील रहा, प्रेम का अभाव, अकेलेपन का प्रभाव लिए कविता प्रकृति एवं प्रेम के स्पंदन को स्वीकार करते हुए नदी की तरह बह रही है। यही अनुभव कलम के माध्यम से रेखांकित हुआ हैं पुस्तक का प्रकाशन कल्पना में तो था किंतु अपने प्रमुख कार्य 'गौ करुणा अभियान' के प्रवाह में एवं मार्गदर्शन के अभाव में यह कार्य पूर्ण नहीं हो सका था।

अगली पुस्तक 'क्षमा नेहा का नीड़' होगी। 'प्रेम को प्रेमाश्रय' समर्पित'

अनुक्रमणिका

१	चिंगारी	७
२	मैं पत्थर	८
३	आईना	९
४	सूर्य	१०
५	कल्पना	११
६	विजय तिलक	१२
७	विषधर	१३
८	सत्कार	१४
९	एक रोटी	१५
१०	खेतों के बीच	१६
११	तेरे लिये	१७
१२	जिन्दगी	१८
१३	तन्ख्वाह, आमदनी, वेतन, कमाई	१९
१४	परिधि	२०
१५	तू तू - मै मै	२१

१६	गांव	२२
१७	हे युवा	२३
१८	सरोवर	२४
१६	मेरे पिता	२५
२०	पवित्रता	२६
२१	पवित्र	२७
२२	जानता हूं	२८
२३	सफेद कौवे	२८
२४	तुम	२६
२५	सृजन	३०
२६	मौन	३१
२७	मोक्ष द्वार	३२

चिंगारी

आग जल रही है ..

चूल्हे में ..

पेट में ..

सिर में ..

समस्या से जूझता सिर

भूख से जूझता पेट

और

चूल्हे की आग से

जूझता मैं

मै ही शायद आग हूं

मै ही आग की राख हूं

जिस राख के ढेर में

शेष नहीं है अब

चिंगारी

मैं पत्थर

आभास नहीं मुझे
ठंड, गर्मी बरसात का
निराकार में पड़ा था
तुम्हारी कला ने
मुझे आकार दिया
मुझे धड़कने दी
मेरे कटीले रोम-रोम को
मिला तुम्हारा फुल सा स्पर्श
मेरा हर कण-कण
तुम्हारे कर्ज में डूबा है।
ओ मेरी श्रेयसी, प्रेयसी,

प्रिया, प्रियतमा
मेरा यह जीवन
ये सांसे,
ये ललित दिन
ये बसंती राते
सब तुम्हारी देन है
तुमने इतना दिया कि -
आमरण मेरी सांसे
तुम्हारी ऋणी रहेंगी
लुटाकर सर्वस्व अपना
मै उऋण न हो पाऊंगा

आईना

आईना मुझे देख मौन
मैं उसे देख मौन
मैं मुस्कुराया
वह मुस्कुराया
मेरे मन का भेद
नहीं वह जान पाया
दोस्त आया
मैं मुस्कुराया
वह मुस्कुराया बोला
ऊपर से खुशहाल
अंदर बदहाल
ऐसा क्यों है, हाल

निश्वास, भरी आंखें
कांपते होंठ, निढ़ाल शरीर
फूटता सब्र का बांध
आगोश में लिया बांध
कहा, मैं हूं ना
कहां, मैं हूं ना
तब से आईने पर
भरोसा टूटा है
आईना झूठा है
अब यह जाना है
आईना शरीर है
दोस्त आत्मा है।

सूर्य

आकाश की रक्तिम आभा
लालिमा से नीलांबर
नीलांबर से पुनः लालिमा
इस बीच ना जाने क्या-क्या
पेड़ पत्ती फल फूल
सुबह से शाम तक
पक्षियों का कलरव
नदियों का कल-कल
गढ़ता जीवन पल-पल
सुबह दोपहर शाम
किरण किरण फैलाकर
फिर जाता अस्ताचल
अपना सर्वस्व देकर
नहीं मांगता सेवा फल
ब्रम्हांड नायक सूर्य
बेकल
फिर उदित होने कल

कल्पना

मेरी कल्पना मेरे शब्द
मेरी पंक्तियां मेरी कविता
ओसामा बिन लादेन की तरह
अफगानी पहाड़ियों में खो गए है
जो भी इसका पता देगा
उसे नहीं दूंगा मैं
अमेरिकी डालर या सिक्के
मैं दूंगा उसे एक महकता
फूल
क्योंकि
मुझे नहीं चाहिए
तीर और तलवार से
झुका हुआ
खरीदा हुआ
मुर्दा शरीर
मुझे चाहिए
खुशबू और प्यार से
भरी हूई
आत्मा

विजय तिलक

डरो मत आग नहीं.
मेरे आगोश में
आकर तू बे फिक्र समा जाया कर,
बर बस बरस जाए आँखे मेरी
उससे पहले आ,
प्यार बरसा जाया कर
तुझसे मिलने की कशिश मिटे
उससे पहले आ,
मिल जाया कर
टूट कर जर्रा जर्रा बिखर जाऊं मैं
उससे पहले आ,
मुझे संभाला कर
कहीं भूल ना जाऊं सफर का रास्ता
उससे पहले आ,
मेरा हाथ थामा कर,
नजर बुरी जमाने की पड़े मुझ पर
उससे पहले आ,
फैला के आंचल मुझे बचाया कर
हार न जाऊं कहीं मै,
तू कर से कर मिला कर
रोज मेरे माथे,
विजय तिलक
लगाया कर।

विषधर

समुद्र मंथन
मिला अमृत विष (हलाहल)
अमृतपान से देव पाए
अमरत्व
हलाहल विष पान से
शिव बने 'विषधर'
विष से काल
काल और काल रोक
शिव बने महाकाल
गलहार जिसका नाग
वस्त्र है सिंह खाल
जटा में जिसके गंगा

श्रृंगार जिसका भस्म
घूमता जो अधनंगा
फिर भी रूप उसका
'सत्यम शिवम सुंदरम'
हे 'विषधर'
काम क्रोध लोभ
राग द्वेष का हलाहल
है मानव में भरा भरा
हमें सिखा दो 'विषहरण कला'
हम बन जाएं 'विषहर'
तुम बने रहो 'विषधर'

सत्कार

अपलक नयन करते इंतजार
मेरे आगत
करता हूं तुम्हारा स्वागत
लगाकर तोरण - पताका
बनाकर स्वागत द्वार
हाथों में फूलों की माला
और
कुमकुम चंदन अक्षत सजी थाल
आप पधारो मेरे आंगन
करो मेरा आतिथ्य स्वीकार
होगा मुझ पर आपका उपकार
आपने दिया मुझे प्यार स्नेह अपार
मेरे जीवन में रहा आपका यह उधार।

एक रोटी

अनेक
काले-काले
बड़े छोटे दाग लिए
अनकही कहानियों को समेटे
सत्य - असत्य
प्यार- प्रतिशोध से
सिमटी गुन्थी
गुत्थियो को
उल्टा-पुल्टा, सुलझाकर
रुलाने और हंसाने वाली
पसीने से भीगी-भीगी
मखमल ऊपर सूखने वाली
गोल-गोल दुनिया में
गोल-मोल बनती बनाती
गुमनाम को नाम देती
नाम को बेनाम बना
कहीं सम्मान
कहीं असम्मान
इंसान को पशु
पशु को भगवान बना देती है
बहुत छोटी
एक रोटी

खेतो के बीच

खेतों के बीच
कितने कितने दिनों से
आज तक
चीर कर धरती का सीना
बो कर अपना पसीना
उगाता है वह
सभी के लिए अनाज के दाने
भीड़ भरे चौराहे से
जिसे लोग बाजार कहते हैं
लौटता है वह
खाली–खाली

उसके मेहनत की
मीठी कमाई
दब जाती है
पथरीले सीने
और थुल-थुल पेट के नीचे
जो छीन लेते हैं
हमारे पूरे अधिकारों को
क्योंकि अलग अलग है
हमारी मेड़ पार
खेतों के बीच

तेरे लिये

मुझे सुहाती है
आकाश की नीलिमा
मुझे बुलाती है
आकाश की लालिमा
समा जाते हैं, मेरे भीतर
आकाश के आलींगन से
अनंत अनंत रहस्य
आलिंगन मुक्त होते ही
मुझे घेरती है
जड़ता, शून्यता,
एकाकीपन सन्नाटा
मेरे बंधे पैर शून्य आंखें
तब
झक झोरता है कोई मुझे
कानों में धीरे से कहता है
तुझे चलना है मीलो
आकाश के आलिंगन के लिए
जहां अनंत शक्तियां
प्रतीक्षारत है
तेरे लिए ... तेरे लिए....

जिन्दगी

जिंदगी
ताश की पत्तियां
किसी ने बताया,
ताश में
दूक्की से तिक्की
तिक्की से चौकी
बेगम से बादशाह
सबसे बड़ा एक्का होता
और दुक्की सबसे छोटी
खेल शुरू हुआ जिंदगी का,
दुक्की ने एक्का को दी मात
तिक्की, चौकी, पंजी की क्या
बिसात
नहले पर दहला भारी
गुलाम से बेगम हारी
बादशाह को बेगम नहीं प्यारी
बावन पत्तों से बाहर
जोकर सब पर भारी,
बाबू!
जिंदगी ताश का खेल
जिधर देखो रेलम पेल
सबसे बड़ा तीन इक्का
बोलता है ताश
तीन इक्का रख कर खिलाड़ी
बोलता है पास
जिंदगी का खेल
ताश की तरह निराला
इस खेल में चलता नहीं हवाला
जिंदगी ताश का खेल
कहीं जीत तो कहीं दिवाला

तनख्वाह, आमदनी, वेतन, कमाई

मिलता है पहली तारीख को
मास भर की मेहनत का
प्रतिफल
जो कहलाता है
तनख्वाह आमदनी कमाई और
वेतन
मेहनतकश चिंतक तन को देते
है
तन्खवाह से खरीदा अन्न
जिसे खाकर रहता है
तन, मन स्वस्थ और प्रसन्न
दिखते हैं वेतन भोगी आम
किंतु मासिक आमदनी से
बचाकर
जरूर करते हैं दान
किंतु छपास से दूर

बहुत से ऐसे लोग हैं
जो नहीं कहलाते दानी
कम या ज्यादा हो उनकी कमाई
इसी सन्तोष धन से
पालते हैं बीवी, बच्चे, माई
आज सुन लो मेरे सारे भाई
तन को वेतन से,
तन के परिश्रम से,
उपजे धन से दें से ही देना
खाना
वरना जीवन भर पड़ेगा
पछताना
एसा काम कभी मत करना
भैया
आमदनी अठन्नी और खर्चा
रुप्या,

परिधि

अदृश्य सर्वव्यापी
दीवार और सीमा
मर्यादा और महिमा
परिधि तेरे रूप अनेक
सीता लाँघे तो अपहरण
सैनिक लाँघे तो आक्रमण
अमीर का दिवाला
गरीब का निवाला
तुम हंसती हो तो
ईद, होली और दिवाली
तुम टूटी तो
दंगा, लूट और आगजनी
तुम निभी तो
आबरू और भाईचारा मे हो
कही नारी, कही नारा मे हो
तुम जात, तुम पात मे हो
नभ, धरती, सागर मे हो
बटते घर के गागर मे हो
'परिधि'
तुम अदृश्य सर्वव्यापी
तुम आन, बान और शान मे
हो
तुम हटी तो मासूम पले,
तुम हटी तो कोई दरिंदा बने।

तू तू - मै मै

तू तू है
मै मै हूँ
अलग - अलग
फिर भी अलग अलग नही
मै और तू
'तू मै हूँ , मै तू हूँ'

नही है,हम दोनो के बीच
'तू तू मै मै'
क्योकिं खत्तम कर देते है
मै और तू
फासला - अलगाव
विषय - विकार
शायद इसलिये नही होती
हम दोनो के बीच
'तू तू - मै मै' की तकरार

एक नही हमारे विचार
फिर भी
हम दोनो जानते
कैसे देना है सम्मान
एक दुसरे के विचारो को
कैसे पूरी करना है जरूरते
बिना बोले एक दुजे की
शायद इसलिए नही होती
हम दोनो के बीच
'तू तू मै मै'

प्यार नही, नही दरार
बेकरार नही, नही करार
अपेक्षा और उपेक्षा से दूर
शायद इसलिए नही होती
हम दोनो के बीच
'तू तू मै मै'

गांव

काली कालतोर की सड़क आयी
इर्ष्या, फरेब, झूठ, बेईमानी
कालापन साथ लायी

कार्यालय की कुर्सी पर बैठे
खाकी सफेद, काले मच्छर
जो चूसते हैं खून
भोले सरल गांव का

अधिकार और आदेश का
फैला कर ब्लाटिंग पेपर
सोख लेते है पसीना
किसान और मजदूर का

उजड़ता हरा भरा पेड़
उगता बिजली का खम्बा
घर घर फैलता प्रकाश
फिर भी
गाँव कल भी खाली था
गाँव आज भी रीता है
गाँव खून के आंसू पीता है
गाँव है, बदहाल
तो कैसे देश खुशहाल

हे युवा

इरादा हो मजबूत अगर
मंजिल आती खुद डगर पर
पिघलते हैं पत्थर
रुख बदलती है नदियां
पल में होते बिगड़े काम
लगती नहीं सदियां
उर्जा तुम इतनी बढ़ाओ
पिघल जाए फौलाद
गर्व से कहें माता-पिता
यह है हमारी औलाद।

सरोवर

तृप्त मन
शांत मन सरोवर सा
खिला पुष्प संतोष का
मन हुआ पुष्कर
ना लहरें हैं
ना ज्वार भाटा
नही तैरता जहाज
उमीदो का
शार्प सार्क संघर्ष
आ जाते जीवन मे
नियति मान स्तब्ध
नहीं उठती अब तरंग
खिला आनंद रंग
बरस रही उमंग
खिलती आशा
डूबा-डूबा मलंग
तृप्त मन अब
गम्भीर शांत
'सरोवर'

मेरे पिता

मेरे पिता
मेरे केंद्र बिंदु और मेरी परिधि
मेरी दुनिया और मेरे आदर्श
मेरे निर्भय सक्षम जीवन के
प्रादर्श
सफेद कुर्ता और पजामा
चुस्त-दुरुस्त दुकानदार
और दमक दार काया
जिनके चेहरे की आभा
कर्म ही जिनकी परिभाषा
मेरे जीवन की आशा
जिनके उपहार में
बंकिम टैगोर प्रेमचंद की पुस्तकें
प्यार बनकर बरसती थी
ऐसा कुछ भी नहीं था
जिसके लिए मैं तरसता था
पिता मेरा आसमान
पिता ही मेरी छाया
परमेश्वर यदि है पुनर्जन्म
तो मुझे देना मेरे पिता
फिर वही साया
और पा लूँ तेरी माया
मेरे पिता मेरी परिधि
मेरे पिता मेरा साया

पवित्रता

पूनम में छिपी
अमावस की रात है
कल्पना और कविता
किताब और कोष का
अब एक मात्र शब्द जो
पद पैसा प्यार
प्रतिष्ठा और पुरस्कार
के बाजार में
नीलाम हुआ है
जो खरीदा
वह भी बदनाम हुआ है
छलिया का छल
बहुरुपिया का मुखौटा
मन का भ्रम जाल है
पवित्रता अब सिर्फ ढाल है।

पवित्र

पवित्र पवित्रता

सिर्फ भगवान में है

भ - भूमि

ग - गगन

व - वायु

अ - अग्नि

न - नीर

यही सिर्फ पवित्र है

जहां पवित्रता है

वहां भगवान है

पवित्रता ही तीर्थ है

मै जानता हूं

मैं जानता हूं
तुम जानती हो
तुम खूबसूरत नहीं हो
लेकिन
इतने वर्षों से
तुम इस बात से अनजान हो
कि
तुम से खूबसूरत
इस संसार में मेरे लिए
कोई और नहीं

सफेद कौवे

घड़े में
पानी कम था
इसलिए
काले कौवे ने
कंकर डालकर
अपनी प्यास बुझाई थी
आज घड़े में
दूध घी अनाज कम है
इसलिए
डालकर पानी चर्बी कंकर
हमारी प्यास बुझा देते हैं
सफेद कौवे

तुम

ठंड की गुनगुनाती धूप
बरसात की रिमझिम बारिश
गर्मी की शीतल हवा
मेरे सारे रोगों की एक दवा
पुराना ना होने वाला कैलेंडर
मेरे धड़कनों की कहानी
मेरे बंद आंखों की सुहानी
मेरे कानों में बहती स्वर लहरी
तुम दिल में खिलती बागवानी हो
सर्दीली रातों की रजाई
प्यासे होठों की ठंडाई
मेरे आगोश में सिमटी अंगड़ाई
तुम इस जीवन की गूंजती शहनाई हो

सृजन

बीज से पौधे का अंकुरण
अंडे से जीव का स्फुरण
फलों में स्वाद का विस्तारण
डाल पर फूलों का पल्लवन
है प्रकृति का अनुपम सृजन
उष्मा से जल वाष्पीकरण
शीतल से जल निस्तारण
किरण से जीव जगत संचयन
प्रकाश से वनस्पति का संश्लेषण
है सूर्य का अनुपम सृजन
कलाकार का कलांकन
चित्रकार का चित्रांकन
प्रसव से संतान का अवतरण
मां के आंचल से दूध का झरन
है मातृत्व का अनुपम सृजन
आकाश का धरती को चुंबन
उष्मा से खिलता धरती का यौवन
पवन वेग से जल की चंचलता
ज्वाला जलन को जल दे शांति
है आदि शक्ति का अनुपम सृजन

मौन

वाद विवाद निसंवाद

कुटिल प्रहार चुभता कहर

अंतर्मन का दर्दीला नासूर

जन्म से जन्मांतर तक

नरक नफरत का द्वार है

मौन

खामोश निशब्द

धैर्य एकाग्रता शून्यता

संपूर्ण आशा नवीन परिभाषा

पूजा साधना आराधना

आत्मशक्ति परमात्म

मिलन का द्वार है।

मोक्ष द्वार

कंकर-कंकर शंकर है
पथ, पंथ, पताका,
मतों का सिर्फ अंतर है
झांके जो अंतर-अंतर
जाने वो अंतर-अंतर

धर्म का यही तो मंतर है
कर्म नहीं जिस अंतर में
मर्म नहीं जिस अंतर में
वही तो सिर्फ कंकर है
वरना कंकर-कंकर शंकर है

धर्म-कर्म और मर्म की
त्रि-बेल खिले जिस हृदय में
वही कंकर बनता शंकर है

भेड़, भीड़-भाड़ प्रदर्शन है
कंकर-कंकर, सिर्फ कंकर है

धर्म-कर्म की दो आंख लिए
मानव तू तौले जो संसार
लेकर भाग्य कटोरा
तू ! भीख मांगे शंकर, कंकर
से
घूमे जगत-जगत के द्वार

मर्म स्पर्श करें, जो कंकर
उसके दास बने, त्रिनेत्र शंकर
भोले-भाले का भोले, खोले
ज्ञान चक्षु का द्वार
'उसको मिलता मोक्ष अपार'

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - तेजकरण जैन

जन्म - ३१.१०.१९५६

संपर्क - ०७५०६३६३६३६ ०९४२४१०५९१४

ई मेल - tejkaranjain1956@gmail-com

पता - मुख्य मार्ग, मोहला, जिला-राजनांदगाँव, छतीसगढ, ४९१६६६

शिक्षा - वाणिज्य,विधि स्नातक,

प्रकाशन- अनेको गद्य-पद्य का प्रकाशन

सम्मान- दोनो विधाओ मे प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत और सम्मानित।

अहिंसा और गौरक्षा के क्षेत्र मे किये गये अविस्मरणीय कार्यो के लिए छतीसगढ शासन द्वारा 'राज्य गौरव अलंकरण सम्मान'। मध्यप्रदेश शासन द्वारा गौवंश रक्षार्थ प्रशस्ति-पत्र एवं सम्मान, करुणा नंदी, करुणा मित्र, प्राणी मित्र, करुणा प्रहरी, जैन कीर्ति सम्मान, मानव सेवा कल्याण एवार्ड, अहिंसा एवार्ड, राष्ट्रीय भगवान बुद्ध फेलोशिप, कर्नाटक सुपर अचिवर्स एवार्ड आदि-आदि।

अन्य - गौवंश पर आधारित बहुराष्ट्रीय डाक टिकटों, डाक सामग्री, नोट, प्रचलित एवं अति दुर्लभ सिक्को, कलात्मक सामग्रियों का अनूठा विशाल संकलन जिसे लिम्का बुक आफ रिकार्ड, एवरेस्ट बुक आफ रिकार्ड, नेपाल सहित दस रिकार्ड प्राप्त। गौवंश का महत्व जन समुदाय के समक्ष लाने के लिये इन संकलित सामग्रीयो की एकल प्रदर्शनी के माध्यम से 'गौ करुणा अभियान' का निरंतर संचालन। भारत के पांच राज्यो मे अब तक २८ प्रदर्शनी सम्पन्न। वास्तु एवम् ज्योतिष सेवा मे वास्तु गौरव अलंकरण नेपाल, इन्द्रप्रस्थ देवज्ञ एवार्ड, वास्तु विक्रम एवार्ड, वास्तु नरेश सम्मान, वास्तु आदित्य सम्मान, विनायक ज्योतिष गौरव सम्मान आदि आदि,

जैन मुनियो के समक्ष समस्त सेवा कार्य के लिये 'निशुल्क एवं निस्वार्थ' समर्पण हेतू संकल्पित।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-042-1

मूल्य 60/-

शब्द सुगंध